छत्तीसगढ़ी जन्म संस्कार : सोहर गीतों के आलोक में

उर्मिला शुक्ल

संस्कार और समाज का आपस में गहरा संबंध है। एक तरह से संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य का समाजीकरण किया जाता है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज के अपने संस्कार होते हैं। समाज अपने नये सदस्यों को उन संस्कारों में संस्कारित करता है। भारतीय समाज, खासकर सनातन धर्म को मानने वाले समाज में संस्कारों का बहुत महत्व है। यहाँ मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु तक कई संस्कारों से गुजरना होता है। इन सभी संस्कारों में जन्म संस्कार का विशेष स्थान है। परिवार और समाज में जन्म लेने वाले नये सदस्य को जन्म से ही संस्कारित किया जाता है।

हमारा समाज लोक पोषित समाज है, जिसका प्रमुख आधार लोकगीत है। ये लोकगीत शब्दों का सामुच्य मात्र नहीं है, इनमें समाज अपनी पूरी परंपरा के साथ मुखर होता है। गीतों का यह सिलसिला जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर चलता है। बच्चे यानी लड़के के जन्म पर गाये जाने वाले गीत सोहर कहे जाते हैं। ये स्त्रियों के द्वारा गाये जाने वाले गीत हैं। इन सोहर गीतों की शुरुआत कब हुई होगी ? इस प्रश्न का उत्तर तुलसी कृत 'रामचरितमानस' में मिलता है–

"धन धन नगर अजोध्या धन राजा दशरथ हो

अब धन री कौसिल्या तोहार भाग

राम जहाँ जनमें हो

जउने दिन राम जनम भये

धरती अनंद भई हो

अब बाजन लागी अनंद बधइया

गावंय सखी सोहर हो।"

या फिर यह गीत-"अवध में बाजे बधइया उठन लगे सोहर हो।"

गर्भवती स्त्री की चाल-ढाल, उसकी रुचि-अरुचि से भी होने वाला बच्चा लड़का है या नहीं यह अनुमान भी लगाया जाता है। इस सोहर गीत में गर्भवती कौशल्या में उभरने वाले लक्षण से अनुमान लगाया जा रहा है कि उनके गर्भ में राम हैं, जिसके कारण उन्हें बेला और चमेली जैसे खुशबू वाले फूलों की भी खुशबू महसूस नहीं हो रही है। इस गीत में राम यानी लड़के के जन्म का हुलास भी झलक रहा है। देखिए :

"दुवरे पे आवेली मलिनिया से रानी पूछली हो

मालिन कवन-कवन फूल लाइव एकव नहीं महके हो

एक त लाइन बेला दूजे चमेलिया हो

रानी तोहरे गरभ सिरी राम एहिस नाहीं महके हो

एतनी बचन रानी सुनली मलिनिया से बोलली हो

मालिन जो मोरे होईहँय सिरी राम कंगनवा पहिराइब हो।"

इस गीत में कौशल्या मालिन से पूछ रही हैं कि मालिन आजकल तुम ये कौन से फूल लाती हो, इनमें तो जरा भी खुशबू नहीं है। तब मालिन कहती है कि मैं तो फूलों में सबसे खुशबूदार फूल बेला और चमेली ही ला रही हूँ। मगर इस समय आपके गर्भ में श्री राम हैं, इसलिए आपको इनकी खुशबू महसूस ही नहीं हो रही। इसी तरह के न जाने कितने सोहर गीत हैं, जिनमें राम जन्म कथा का वर्णन है। कुछ गीतों में कृष्ण जन्म का वर्णन भी है। जैसे–

"नन्द घर बाजत बधइया

जसोदा घर सोहर हो

जहाँ जनमें हैं किसन कन्हैया

तीनों कुल तारन हो।

बोलावव नगर से डगरिन

तव नरिया कटवाव हो

ललना ले आवव

सोने कय कठवतिया

त कान्हा नहवावँव हो। "

नन्द के घर में बधाई बज रही है और सोहर गाया जा रहा है, क्योंकि वहाँ कृष्ण का जन्म हुआ है। कृष्ण के जन्म से नन्द के तीनों कुल तर जाएंगे। सखी कहती है–नगर से नाल काटने वाली को बुला कर नाल कटवाओ। सोने की कठौती लेकर आओ कान्हा को नहलाओ। राम की तुलना में कृष्ण जन्म के सोहरों की संख्या कम है। कारण शायद राम की लोक व्याप्ति ही है, जिससे सोहर भी राममय हो उठे हैं। कुछ सोहरों में राम के जन्म के बाद उनकी छठी के उत्सव का वर्णन भी मिलता है।

इन सोहर गीतों की विषय-वस्तु के आधार पर, यह कहा जा सकता है कि यहीं से अवध के लोक में लड़के के जन्म पर, सोहर गाने का चलन हुआ होगा और लड़के के जन्म पर गाँव की स्त्रियों के द्वारा सोहर गाया जाने लगा होगा। सोहर गीतों में गर्भवती स्त्री के खान-पान को लेकर भी लोक में बहुत से सोहर

मिलते हैं। ऐसा माना जाता है कि बच्चे के रूप और गुण पर माँ के खान-पान और क्रिया-कलापों का भी गहरा असर पड़ता है। इस सोहर में यही वर्णित है–

"पनवा अइसन धनि पातर

कुसुम रंग सुंदर हो।

ललना बहुआ के भये हैं ललनवा

अंगनवा उठे सोहर हो

मचिया पे बैठीं तुहूँ सासु बहु से अरज करंय हो

ये दुलहिन कवन-कवन फलवा खायो

होरिल बड़ सुंदर हो।

खयली मय अमवा अमिलिया केरुंदा फल केरवन हो

ये सासू छिली छिली खइली नवरंगिया होरिल बड़ हो सुंदर।

छिली छिली खइली हम नरियर होरिल बड़ हो सुंदर।"

यहाँ सास, बहू से पूछ रही है बहू तुमने कौन-कौन से फल खाये कि होरिल (लड़का) इतना सुंदर है। बहू जवाब देती है–मैंने आम, इमली और कैथा खाये। मैंने नारंगी (संतरा) और नारियल खाये, इसीलिए होरिल इतना सुंदर है। हमारे समाज में लड़के के जन्म के बिना परिवार अधूरा और स्त्री जीवन व्यर्थ माना जाता है, स्त्री को बाँझ होने के ताने भी सुनने पड़ते हैं। इस गीत में इसी स्थिति का वर्णन है–

"घरवा म बइठे धनी त

धनिया अर्ज करे हो

ए धनी सुन लो हमरी बचनिया त

मन बड़ा व्याकुल हो

सासू रोजे मारें तनवा

ए धनी सून हय हमरा अंगनवा

एक रे ललन बिना हो।

सासू बोलअंय मोहे बाँझिनिया त

ननदी मारे तनवा हो

ए भौजी फाटत हय मोर करेजवा

एक रे ललन बिना हो।

माने हम केतना मनौती सुनव धनी हो

ए धनी हमरे जो होईहंय ललनवा त

चुनरी चढ़इबय हो, गोतिया गवइबय हो।"

लोक बहता नीर है। वह एक जगह ठहरता नहीं है, इसलिए वह अवध से बाहर भी जा पहुँचा और अवध के अलावा अन्य प्रांतों में भी सोहर गाने का चलन शुरू हुआ। इस प्रकार लड़के के जन्म पर सोहर गाने की इस प्रथा का फैलाव बिहार, मध्यप्रदेश (बुंदेलखंड) और छत्तीसगढ़ तक होता चला गया। इस दूरस्त और वनवासी इलाके में सोहर गीतों का चलन कब और कैसे हुआ ?

इस प्रश्न का उत्तर तलाशने पर दो तथ्य उभरते हैं। पहला छत्तीसगढ़ राम की माता कौशल्या का मायका माना जाता है। उनके माध्यम से सोहर गीत यहाँ आये होंगे। फिर कौशल्या राजघराने से ताल्लुक रखती थीं। उनके विवाह से दो राजघराने एक-दूसरे से जुड़े। तो यहाँ के लोगों का अवध आना-जाना भी होता रहा होगा। राजघराने का अनुकरण तो प्रजा करती ही है। इस तरह छत्तीसगढ़ में सोहर का चलन हुआ होगा। दूसरा तथ्य है कि अवध के लोगों, खासकर ब्राह्मणों का यहाँ बसाया जाना। छत्तीसगढ़ गोंड आदिवासियों का इलाका रहा है। यहाँ गोंड़ राजाओं का राज्य था। इसलिए राजघरानों में पूजा-पाठ के लिए अवध से ब्राह्मण बुलाकर, उन्हें छत्तीसगढ़ में बसाया गया।

व्यक्ति जहाँ भी जाता है, उसका लोक और उसकी संस्कृति उसके साथ जाती है। इसलिए उन्हीं ब्राह्मणों के साथ ही सोहर गाने की प्रथा यहाँ आयी होगी और छत्तीसगढ़ में भी सोहर गाने का चलन शुरू हुआ होगा। इसका एक प्रमाण यह भी है कि सोहर गाने का चलन छत्तीसगढ़ के नागर समाज में ही है। आदिवासी समाज में सोहर गाने का चलन नहीं है। दूसरा प्रमाण यह कि यहाँ भी लड़के के जन्म पर ही सोहर गाने का चलन रहा है। इस तरह सोहर गीत अवध से छत्तीसगढ़ आये और धीरे-धीरे यहाँ की बोली और परंपरा में ढलते चले गये। अवध की तरह ही यहाँ के सोहर भी अवध और राम के जन्म से ही जुड़े हुए हैं। कुछ गीतों में तो गीत के भाव भी एक जैसे हैं, बस कुछ रीतियों और भाषा का ही फर्क है। जैसे अवध में बच्चे की छठी पर छठ धरने की रस्म होती है, मगर छत्तीसगढ़ में काँके (एक विशेष पेय जो छठी पर ही बनाया जाता है) बनाने की। सो यहाँ के सोहर में काँके बनाने का जिक्र होता है।

छत्तीसगढ़ में बच्चे के जन्म से पहले (गर्भ के सातवें महीने) और जन्म लेने के बाद कई संस्कार किये जाते हैं, जिन्हें लोकगीतों के मधुर भाव और अर्थवान बना देते हैं। इनमें जन्म संस्कार के वक्त गाये जाने वाले सोहर भी शामिल हैं। छत्तीसगढ़ में जन्म संस्कार के अंतर्गत बच्चे के जन्म से पहले, सधौरी की रस्म की जाती है। सधौरी की यह रस्म सातवें महीने में की जाती है। सधौरी यानी साध (इच्छा) पूरी करना। इस समय गर्भवती स्त्री को सात प्रकार के पकवान खिलाये जाते हैं और खाने-पीने से सम्बंधित उसकी

सारी साध पूरी करते हैं। गर्भवती स्त्री के मायके से भी सधौरी आती है, जिसे 'मायी सधौरी' कहते हैं। इस रस्म में बेटी के लिए मायके से कपड़े और गहने के साथ ही, विविध प्रकार के पकवान भी आते हैं। सधौरी के वक्त अन्य रिश्तेदार स्त्रियाँ भी उसके लिए कपड़े, सात प्रकार के पकवान लेकर आती हैं। इन पकवानों में-खुरमी, पपची, लाड़ू (लड्डू), सोंहारी, पिड़िया, कुसली (गुझियाँ, करी लाड़ू (सेव के लड्डू) जैसे सात पकवान शामिल रहते हैं।

सधौरी के समय बहुत से गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में आने वाले बच्चे की खुशी झलकती है। बच्चे के स्वास्थ और सौंदर्य के लिए गर्भवती स्त्री को तरह-तरह की औषधियाँ भी खिलायी जाती हैं। इस सधौरी गीत में मधु और पीपल पिलाने का वर्णन है। जो इस प्रकार से है–

"महला म ठाढे बलम जी

अपन रनिया मनावत ओ।

रानी पी लो मधु-पीपर,

होरिल र दूध आहि ओ।

कइसे के पियंव करुयावय

अउ झर कासर ओ

कपूर बरन मोर दाँत

पीपर कइसे पियंव ओ।

मधु पीपर नइ पीबे

त करहूँ मय दूसर बिहाव

रानी पी लो मधु-पीपर ओ।

पीपर के झार पहर भर

मधु के दुइ पहर ओ।

सउत के झार जनम भर

सेजिया बंटावय ओ।

कंचन कटोरा उठावब

पी हूँ मधु-पीपर ओ।"

इस गीत में पति, पत्नी से कह रहा है कि प्रिय तुम मधु और पीपर पी लो। इसे पीने से हमारे बच्चे के लिए दूध उतरेगा (माँ का दूध)। पत्नी उसे पीना नहीं चाहती, क्योंकि वह कड़वा है। पति, पत्नी से फिर मनुहार करते हुए कहता है कि सोने के कटोरे से दूध, मधु और पीपर पी लो। पत्नी के इंकार करने पर कहता है, इसे पी लो नहीं तो दूसरी शादी कर लूँगा। पत्नी सोचती है अगर पति ने दूसरी शादी कर ली, तो ..? सौतन का संग तो इस कड़वी पीपर से भी कड़वा होगा। इस पीपर की कड़वाहट तो कुछ देर ही रहेगी, मगर सौत को तो जिंदगी भर सहना पड़ेगा। जिंदगी भर दुःख सहने से तो अच्छा है, यह कड़वी पीपर ही पी लूँ। सो वह पति से कहती है लाओ सोने के इस कटोरे से मैं कड़वी पीपर पी लेती हूँ।

इस तरह के कई और गीत गाये जाते हैं। सोहर गीतों में मन की भावनाएँ व्यक्त होती हैं। एक गीत में बहू की मनोदशा का वर्णन है। बच्चे के जन्म पर होने वाली रस्मों में ससुराल पक्ष की अहम भागीदारी होती है। इसलिए वह अपने ससुराल के लोगों को बुलाती है, मगर वो अपनी अकड़ दिखाते हैं और नहीं आते, तब वह बड़े दर्प से कहती कि अगर नहीं आना है, तो मत आओ। मुझे भी तुम्हारी कोई जरुरत नहीं है। मेरे मायके के लोग सारी रस्में निभा लेंगे। वह कहती है मैं ननद की जगह, अपनी बहन को और ननदोई की जगह जीजा को बुला लूँगी। वह जेठानी की जगह भाभी और जेठ की जगह भाई को बुला लेने की बात कहती है। इसकी एक झलक इन पंक्तियों के माध्यम से देखिए–

"हम छबीली सबके काम पडबोन।

ननदी बोलायेंव उहू नइ आइस ननदी हो हमार का करि लेहव।

बहिनी बलाके कांके मढईबोन

हम छबीली सबे के काम पड़बोन।

ननदोइ बोलायेंव उहू नइ आइस

भाँटो (जीजा) बला के नरियर फोरा लेबोन

हम छबीली सबे के काम पड़बोन|

जेठानी बोलायेंव उहू नइ आइस

जेठानी हो हमार का कर लेहव।

भौजी बला के सोंहर गवाबोन

हम छबीली सबे के काम पड़बोन।

जेठ जो बोलायेंव उहू नइ आइस

जेठ हो हमार का करि लेहव।

भाई बला के बन्दुक छुटई लेबोन

हम छबीली सबे के काम पड़बोन।

ससुर बोलायेंव उहू नइ आइस ससुर

हो हमार का करिलेहव।

बाबा के नाम धरइ लेबोन

हम छबीली सबे के काम पडबोन।

सासे बोलायेंव उहू नइ आइस

सासे हो हमार का करिलेहव।

दाई बला के टुठू बंधवइबोन

हम छबीली सबे के काम पड़िबोन।"

एक सोहर में देवर की शरारत उजागर हुई है। गर्भवती पत्नी सो रही है। सो पति सोचता है कि उसके भीतर जाने से पत्नी की नींद न टूट जाए, इसलिए वह सोचता है खिडकी से भीतर जाऊँ या अटारी पर चढ़कर कमरे में प्रवेश करूँ। क्या करूँ कि पत्नी की नींद में कोई विघ्न न पड़े, मगर शरारती देवर निरमोही है। उसको भाभी के जाग जाने की कोई चिंता नहीं होती और वह बंसी बजाने लगता है।

"एक धन अंगिया के पातर

दुसर गरभवती हे ओ

ललना अंगना में रेंगत लजाय

तिरिया मोर सूते हे

मैं कैसे के जगावंव ओ

झपक के चढ़ों मैं अटरिया

खिरकी के लेके ओ

लागू

ललना, छोटका देवर निरमोहिया

बंसी ल बजावत हवै ओ।"

इस तरह इन सोहर गीतों में हँसी-ठिठोली, नोक-झोंक और मान-मनोबल भी शामिल रहता है। इन गीतों में मन की कोमल भावनाएँ व्यक्त होती हैं। छत्तीसगढ़ में भी सोहर गायन की शुरुआत राम या कृष्ण के जन्म प्रसंग से ही की जाती है। ऐसा ही एक गीत है, जिसमें देवकी और यशोदा के बीच बातें हो रही हैं। देवकी की मनोदशा यह है कि उसके सात बेटों को मार दिया गया है। अब आठवें की बारी है। क्या उसे भी वह खो देगी? यह प्रश्न उसे चैन नहीं लेने दे रहा है। ऐसे में देवकी की मुलाकात यशोदा से होती है। यशोदा देवकी को आश्वस्त करती है कि वह उसके आठवें पुत्र की रक्षा करेगी–

“मनेमन गुने रानी देवकी

मन मं विचारन लागे ओ

ललना ऐही गरभ मैं कैसे

वचइ लेतेवं ओ।

सात पुत्र दिहिस राम हर

सबो ल कंस हर लेइस ओ

ललना ऐही गरभ अवतारे

मैं कैसे बचइ लेतेंव ओ।

घर ले निकरे जसोदा रानी

मोर सुभ दिन सावन ओ

ललना, चलत हवै जमुना असनाने

सात सखी आगू त सात सखी पीछू ओ

सोने के धइला मूड़ मं लिए

रेसम सूत गूडरी हे ओ

कोनो सखी हाथ पांव छुए

कोनो सखी मुँह धौवै ओ

कोनो जमुना पार बइठे देवकी, रोवत हवै ओ

घेरी-बेरी देखे रानी जसोदा

मन में विचारन लागे ओ

कैसे के हकों जमुना पारे त

वोला समझा आतेंव ओ

नहीं त दिखे घाट घठौदा

त नइ दिखे डोंगा ओ

ललना कईसे मय नहकों जमुना पारे

जमुना, ल नहकंव ओ

भिरे कछोरामुड़ उघरा

जसोदा जमुना म धँसगे ओ

बहिनी तंउरत तंउरत गईस पार

देवकी ल समझावय ओ

ललना, कैसे विपत तोला होए

काहे दुख रोवत हवस ओ

कोन तोर सखा पुर में बसगे त

कोन धर दुरिहा हे ओ

ललना कोन तोर सइयाँ गये परदेसे

तैं कोन दुख रोथस ओ

न तो मोर सखा पुर में बसगे

न तो धर दुरिहा ओ

न तो मोर सैंया गये परदेसे

गरभ के दुख रोवँव ओ।

सात पुत्र राम हर दिये

सबेल कंस हर लिहिस ओ

ललना आठे गरभ अवतारे

मैं कैसे बचइ लेतेंवओ।

चुप रह तै चुप रह ओ देवकी

मैं तोला समझावत हावों ओ

मोरे गरभ तोला देहौं

तोर ला बचाइ लेहौं ओ।

नून अऊ तेल के उधारी

पैसा कौड़ी के लेनी देनी ओ

बहिनी कोख के उधारी कैसे होही

मैं कैसे धीरज धरौं ओ।

एक मोर साखी है चन्दा

दुसर सुरज भाइ ओ

ललना, साखी है चन्दा भाइ

त धीरज धर ओ

मैं अपन लेहों बचाय मैं

तोरोला बचाय लेहों ओ।"

यह गीत कृष्ण जन्म की प्रचलित कथा से एक भिन्न कथा लिये हुए है। प्रचलित कथा में यशोदा को मालूम ही नहीं होता कि उसने बेटी को जन्म दिया है और उसे कृष्ण से बदल दिया गया है, मगर इस गीत में यशोदा स्वयं बच्चों की अदला-बदली की बात कहती है। इस गीत में वर्णित कथा में, सखियों के साथ यमुना स्नान को गयी यशोदा देखती है, कोई स्त्री यमुना के उस पार बैठी रो रही है। वह उसका रोना सुन कर व्याकुल हो उठती है और उस पार जाना चाहती है, मगर नदी पार करने के लिए कोई नाव नहीं मिलती। अंततः वह तैर कर उस पार जाती है। देवकी से उसके रोने का कारण जानकर उसे आश्वस्त करती है कि वह अपने बच्चे के साथ-साथ उसके बच्चे को भी बचा लेगी। देवकी कहती है नमक और तेल का लेना-देना तो चलता है, पैसे कौड़ी की उधारी भी होती है, मगर कोख की उधारी कैसे होगी ? तब यशोदा सूरज और चंदा को साक्षी बनाकर वचन देती है कि वह अपने साथ-साथ उसके गर्भ को भी बचा लेगी। इसी तरह एक यह गीत भी है, जिसमें गर्भवती देवकी की सास और ननद अनुमान लगाती हैं कि उसके गर्भ के जो लक्षण हैं उससे लगता है कि उसको बेटा ही होगा–

“पहिली महीना देवकी ल होगे

दुसर महीना होगे ओ

ललना, तिसर महीना देवकी ल होगे

तब मन सकुचावय ओ।

चार महीना देवकी ल होगे

तब गरभ जान परय ओ

ललना, पिवर मुँह डुल ड्डुल ले दिखे

तब अठौ अंग पिवरा दिखे ओ

पांच महीना देवकी ल होगे

तब सास ह पुछन लागे ओ

देवकी ह पेट अवतारे

दुख-सुख बतावन लागे ओ

छठे महीना देवकी ल होगे

तब ननद हंस के कहय ओ होतिस भतिजा अवतारे

तब सुमंगल गातेंव ओ

सात महीना देवकी ल होंगे

तब सास परिखन लागे हो

ज्योंनी अंग मोर फरकत हे

बेटवा के लच्छन हवै ओ

आठ महीना देवकी ल होगे

तब आठों अंग भरि गये ओ

कैसे के लुगरा सम्हारौं

दरद व्याकुल करे हो

नव दस महीना देवकी ल होंगे

तब सुइन ल बला देवै ओ

ललना, उठिगे पसुरी के पीरा

दरद में वियाकूल भये हो

भादो के रतिहा निसि अंधेरिया

पानी बरसन लागे ओ ललना,

खोर मं बिजुरी चमके

बादर गरजन लागै ओ

जनमे तब किसन कन्हैया

देवकी बड़ बियाकुल ओ

झन हो तैं बियाकुल देवकी

मैं करहूँ उपाय येखर

जमुना के पार लेजहूँ ओ।"

इस तरह इन सोहर गीतों का उत्स तो अवध ही है, मगर छत्तीसगढ़ में आकर इनका कलेवर बदल गया है। यहाँ गाये जाने वाले इन सोहर गीतों में एक छत्तीसगढ़ीपन नजर आता है। इनमें यहाँ की माटी की गमक शामिल हो जाती है, जो इन्हें अवधी सोहर गीतों से अलगा देती है।

संदर्भ

1. छतीसगढ़ी लोक गीत : हनुमंत नायडू (लोकगीत संग्रह)
2. छतीसगढ़ी लोक गीत : देवी प्रसाद वर्मा (लोकगीत संग्रह)
3. छतीसगढ़ी लोकगीतों में नारीमन का चित्रण

उर्मिला शुक्ल, ए 21 स्टील सिटी,

अवंति विहार, रायपुर, छत्तीसगढ़